

# ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 26

सितम्बर -1-2024

अंक - 11

माउण्ट आबू

Rs.-12

**बिना आध्यात्मिक सशक्तिकरण के स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज का निर्माण संभव नहीं**



**मालनपुर-म.प्र.।**

ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज भोपाल की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी ने कहा कि आज आवश्यकता है आध्यात्मिक सशक्तिकरण की। जब व्यक्ति तन को भी स्वस्थ रखता है और साथ ही साथ आत्म चिंतन, परमात्म चिंतन की बातों से मन को सशक्त बनाता है तब ही वह एक स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाता है। मुरैना से टाइनी टोट स्कूल के पूर्व निदेशक ब्र.कु. मोहनलाल वर्मा ने कहा कि जब से मैं ब्रह्माकुमारीज संस्थान से जुड़ा हूँ तब से मैंने पाया कि वास्तव में दुनिया में कितना भी धन कमा लें लेकिन सच्ची संतुष्टता तो आध्यात्मिकता से ही आती है और जब तक व्यक्ति संतुष्ट

होकर कार्य नहीं करता, तब तक सच्ची मन की शांति प्राप्त नहीं हो पाती है। इसीलिए यदि हमें स्वच्छ समाज का निर्माण करना है तो अपने मन को बुराइयों से मुक्त करना ही होगा। स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन ने सभी का तह दिल से सम्मान व स्वागत करते हुए कहा कि जब हम एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तभी एक खुशहाल वातावरण व स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं। हमें कभी किसी का अपमान या बदला लेने का भाव नहीं रखना है। यही परिवर्तन अच्छे समाज का निर्माण करेगा। कार्यक्रम में पोरसा से बीजेपी के मंडल अध्यक्ष रामकुमार गुप्ता, स्कूल के डायरेक्टर जैन सर, सत्यम पत्रिका के संपादक विनोद केशवानी आदि गणमान्य लोगों सहित ब्रह्माकुमारी बहनें व भाई आदि उपस्थित रहे।

**ब्रह्माकुमारीज द्वारा वृद्ध लोगों के सम्पूर्ण देखभाल हेतु आशा व कम्युनिटी वर्कर्स के लिए ट्रेनिंग कार्यक्रम**



**पाटन-दिव्य**

**दर्शन**

**भवन(गुज.)।** ब्रह्माकुमारीज व स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त प्रयास द्वारा आयोजित वृद्ध लोगों के सम्पूर्ण देखभाल के लिए आशा व कम्युनिटी वर्कर्स के लिए ट्रेनिंग में जी.वी. मोदी हॉस्पिटल के डॉक्टर ब्र.कु. महेश हेमाद्री ने आशा वर्कर्स व कम्युनिटी वर्कर्स को ट्रेनिंग देते हुए बताया कि वृद्धावस्था में वृद्ध लोगों को शरीर सम्बन्धी क्या-क्या तकलीफें हो सकती हैं। उन्हें कैसे प्रारम्भिक अवस्था में पहचाना जा सकता है व उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है। उन्होंने वृद्ध

जनों के आँखों, कान, उनका उठते व चलते समय शरीर का संतुलन ठीक है या नहीं, पेशाब सम्बन्धी कोई तकलीफ तो नहीं है आदि-आदि बातों पर सभी का ध्यान खिंचवाया। कार्यक्रम में समस्त तालुका स्वास्थ्य अधिकारी सहित 600 से अधिक आशा वर्कर्स, कम्युनिटी स्वास्थ्य वर्कर्स व डॉक्टर्स ने इसका लाभ लिया। कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर्स व आशा वर्कर्स ने कार्यक्रम की सफलता के लिए ब्रह्माकुमारीज का धन्यवाद किया और कहा कि यह प्रोग्राम हमारे लिए बहुत उपयोगी है।

## मन की गंदगी को निकालने के लिए परमात्मा शिव की शिक्षा अपनाना जरूरी

**'आध्यात्मिकता द्वारा सनातन संस्कृति का पोषण' पर अखिल भारतीय सम्मेलन का सफल आयोजन**



**ज्ञान सरोवर-माउण्ट आबू।** ज्ञान सरोवर के हार्मनी हॉल में धार्मिक सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित 'आध्यात्मिकता द्वारा सनातन संस्कृति का पोषण' सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में आचार्य, साधु-सन्यासियों, महामंडलेश्वर, भक्त जनों और प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

ब्रह्माकुमारीज के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज की स्थापना परमपिता परमात्मा शिव के द्वारा ही हुई है। परमपिता परमात्मा शिव ने ब्रह्माकुमारी बहनों के सहयोग से अथवा दूसरी भाषा में कहें कि शिव शक्तियों के सहयोग से विश्व को एक बार फिर से विश्व गुरु बनाने का अभियान आठ दशक पहले प्रारंभ किया। यह सभी शिव शक्तियां परमपिता परमात्मा शिव से प्रेम, शांति, आनंद, ज्ञान आदि मूल्यों को ग्रहण कर पूरी दुनिया में प्रेम, शांति और आनंद का संसार स्थापित करने की प्रक्रिया में लगी हुई हैं।

ब्रह्माकुमारीज धार्मिक सेवा प्रभाग की

अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी ने सम्मेलन को दिशा देते हुए बताया कि जब तक हम सभी अन्तर्मुखता की गुफा में जाकर खुद का साक्षात्कार नहीं करेंगे, अन्तर्मुखता की तनहाई में जाकर जब तक परमपिता परमात्मा से अपना सानिध्य स्थापित नहीं करेंगे तब तक सम्पूर्णता की प्राप्ति नहीं होगी।

कटनी से आये आचार्य श्री परमानंद जी महाराज ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि ज्ञान सरोवर के इस परिसर में इतना सुन्दर कार्यक्रम ब्रह्माकुमारियों के प्रयत्न से ही संभव है और बताया कि आत्मा का अध्ययन ही अध्यात्म है। ये ब्रह्माकुमारी बहनें पूरी दुनिया को अध्यात्म की शिक्षा दे रही हैं। हमें भी आत्मा का सच्चा ज्ञान पूरी दुनिया को देना होगा। हम सभी के सहयोग से ही पूरी दुनिया में अध्यात्म फैलेगा।

बौद्ध मोंक समिति दिल्ली से आए भदन्त करुणाकर महाथेरा जी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज के इस परिसर में अत्यंत आनंद और हर्ष का अनुभव हो रहा है। जीवन में सुख-शांति की प्राप्ति के लिए

ब्रह्माकुमारीज की शिक्षाएं अनिवार्य हैं। अयोध्या धाम से आए आचार्य जलेश्वर दास जी महाराज ने कहा कि अगर हमने परमपिता परमात्मा को सही-सही नहीं जाना और उनके समीप नहीं गए तो सब कुछ व्यर्थ है।

महामंडलेश्वर स्वामी कमल किशोर जी महाराज, सहारनपुर ने ओम शांति का अर्थ बताते हुए कहा कि हमारे वस्त्र गंदे होते हैं तो हम उनको साबुन की मदद से धो सकते हैं। मगर मन में जो गंदगी है उसको निकालने के लिए परमात्मा शिव की शिक्षाओं की ही जरूरत होती है।

परमपूज्य शिव योगी नंद गिरी जी महाराज, पुणे, महाराज स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती, भुवनेश्वर, श्री श्री 108 ईश्वर दास जी महाराज, फरूखाबाद ने भी अपने भाव प्रकट किए।

धार्मिक सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी ब्र.कु. रामनाथ ने सभी साधु-संतों का आभार प्रकट किया।

सम्मेलन का कुशल संचालन राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, हांसी, हरियाणा ने किया।

**अधिक ऑनलाइन फ्रेंड्स व लाइक की चाह में फ्रॉड के शिकार हो सकते हैं युवा**

**मस्तूरी-छ.ग।** आज के युवा जो फेसबुक आदि सोशल मीडिया पर अधिक लाइक की चाह में अनेक फ्रेंड्स बना लेते हैं व अपने पोस्ट पब्लिकली भेजते हैं, वे नहीं जानते कि अनजानेपन में वे अपनी निजी जानकारी ठगों तक पहुंचाने में मदद कर रहे हैं और फ्रॉड का शिकार हो जाते हैं। उक्त बातें ब्रह्माकुमारीज टिकरापारा की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. प्रीति बहन ने सांदिपनी स्कूल के स्टूडेंट्स को सम्बोधित करते हुए कहीं। उन्होंने बताया कि



**साइबर से होते नुकसान पर कार्यक्रम**

सांदिपनी एकेडमी, मस्तूरी में विलासपुर पुलिस व ब्रह्माकुमारीज टिकरापारा द्वारा यातायात व साइबर की पाठशाला लगाई गई व नवीन कानून का भी संदेश दिया गया

इस तरह के फ्रॉड से बचने के लिए अपने पोस्ट केवल फ्रेंड्स के साथ साझा करें तथा सेटिंग में व्यू प्रोफाइल को 'फॉर मी ऑनली' रखें। उन्होंने ओटीपी, यूपीआई, गूगल डॉक्स, ओएलएक्स, स्क्रीन शेयर एप्प, जूस जैकिंग, एपीके लिंक आदि अनेक प्रकार के फ्रॉड के बारे में बताया व उनसे बचने के तरीके भी बताये।



## सर्वशक्तियों व सर्वगुणों के मर्म को जानें...

जैसे सामान्य व्यक्ति भी अपनी रोजमर्रा की आवश्यकताओं का स्टॉक अपने पास जमा रखता है, एक हफ्ते के लिए, महीने के लिए व साल भर के लिए। ताकि उसके जीवन की जरूरतें समय पर पूरी हो सकें। एक यात्री जब कहीं जाता है तो भी अपनी जरूरी चीजों को अपने साथ ले जाता है ताकि उसकी यात्रा चाहे दो दिन की हो, चाहे तीन दिन की, चाहे महीने भर की, उसमें उन आवश्यक चीजों की कमी महसूस न हो। लेकिन जिन्होंने श्रेष्ठ और महान बनने की राह को चुना है और सही अर्थ में पहचाना है, वे भी आवश्यक स्टॉक जमा कर जीवन की आगे की यात्रा को सुगम बनाते हैं। अगर हम महान बनने की दिशा में अग्रसर हैं, तो हमें भी आवश्यक स्टॉक जमा करना ही होगा। जब हम कहते हैं और



राजयोगिनी ब. क. गंगाधर भार्गव

बाबा ने भी हमें सुनाया है कि तुम्हारा एक छोटा-सा ये जन्म बहुत मूल्यवान है। सारे कल्प में सुख, शांति और समृद्धि बनी रहे, उसके लिए स्टॉक जमा करने का समय अभी ही है। बाबा ने कहा, तुम मास्टर सर्वशक्तियान हो, जो चाहो आप शक्तियों का स्टॉक जमा कर सकते हो। महान वो है जो सर्वशक्तियों से स्टॉक को सम्पन्न कर दे, भरपूर कर दे ताकि जीवन में आने वाली चुनौतियों, परिस्थितियों और उलझनों में उन शक्तियों का प्रयोग कर आगे बढ़ सकें। अगर शक्तियों का स्टॉक पर्याप्त नहीं होगा तो परिस्थितियों के वश हो जायेंगे, निर्बल हो जायेंगे और रुक जायेंगे।

देखा जाये तो देवताओं की महिमा में भी गाते हैं, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमो धर्म। लेकिन यहां समझने की बात यह है कि देवताओं को सर्वशक्ति सम्पन्न नहीं कहा गया है, सर्वगुण सम्पन्न कहा गया है। इस मर्म को अच्छी तरह से समझना है। जैसे कहते हैं, ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। ब्राह्मण माना परमात्मा को पहचानना, परमात्मा द्वारा दी गई श्रीमत अनुरूप जीवन को ढालना और चलना, उसी को ब्राह्मण कहेंगे। फरिश्ता माना सर्वशक्तियों से सम्पन्न, परमात्म कार्य को धरा पर साकार करना और निर्बल की सहायता करना, मदद करना। तो ब्राह्मण जो परमात्मा द्वारा प्राप्त शक्तियों का जीवन में प्रयोग और उपयोग करते हैं तो वे गुण बनते हैं। जैसे किसी को हम देखते हैं तो कहते हैं कि ये शांत है। शांति को शक्ति भी कहते हैं और शांति को गुण भी कहते हैं। क्योंकि लगातार व्यक्ति शांति के सागर की शांति का प्रयोग अपने जीवन में करता है तो वो गुण बन जाता है। ऐसे ही प्रेम के सागर परमात्मा के प्रेम की शक्ति का प्रयोग अपने जीवन में करता है तो वो प्रेम के गुण के रूप में परिवर्तित होता है। सबके लिए प्रेम उसकी एक निजी सम्पत्ति बन जाती है। कैसी भी परिस्थिति हो, कैसी भी बात हो, लेकिन एक उस शक्ति की मास्टरी होने के कारण वो सील बन जाता है, उसी में निपुण बन जाता है, सम्पूर्ण बन जाता है। तब तो हम कहते हैं कि ये व्यक्ति तो जैसे शांत मूर्त है, प्रेम स्वरूप है। इसी तरह हमें एक-एक शक्ति को गुणों में परिवर्तित करना है अर्थात् उस शक्ति का यथार्थ रूप में उपयोग व प्रयोग करते हुए उच्चता को बनाये रखना है और सदा बनाये रखना है, तभी हमें वो पदवी व डिग्री मिलती है गुणों (वर्च्युज) की। तब हम देवता बनते हैं। ये कार्य, ये स्टॉक जमा करने का समय अभी ही है जबकि परमात्मा हमारे साथ है और वो हमें देवता बनाने के लिए ही आया है। कैसे बनेंगे, उसकी विधि भी हमें बता रहा है और हमारी हर तरह से पालना, मार्गदर्शन कर रहा है, यह हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। इसका लाभ जो ले लेगा वो लक्की स्टार बन जायेगा। स्टार वही बनता है जिसके पास ऐसा स्टॉक है। तो आइये, हम सभी इस तरह से परमात्मा के निर्देशन में स्वयं को संवारे, सजायें और उन्हीं के अनुरूप स्टार बनकर हम अपने पूरे कल्प के स्टॉक को जमा करें। अभी नहीं तो कभी नहीं। ये कभी नहीं भूलना।

## श्रीमत समझकर सहना और समाना है

कड़ियों में सहनशक्ति है, सहन करते रहते हैं। लेकिन सहन करना भी दो प्रकार से होता है। एक होता है मजबूरी से सहन करना, एक होता है बाबा की आज्ञा से कि तुमको सहनशीलता धारण करनी है। तो अगर हम बाबा की आज्ञा मानते हैं तो उसकी खुशी हमारे अन्दर आ जाती है। और मजबूरी से करते हैं तो अंदर रोते रहेंगे, बाहर से सहन करते रहेंगे। उसका फल नहीं मिलेगा, खुशी नहीं होगी। और सचमुच बाबा की श्रीमत समझकर हमने सहन किया तो उसी समय खुशी होती है। भले लोग समझें कि इसकी हार हुई, इसकी जीत हुई। लेकिन वह हार भी हमको खुशी दिलाती है, क्योंकि मैं परमात्मा के आगे तो ठीक रही। चलो उसने मेरे को समझा कि यह तो ढीली है, यह तो सामना कर ही नहीं सकती है। इसने हारा मैंने जीत लिया। चलो जीत लिया लेकिन परमात्मा के आगे तो मैंने जीता ना! आत्मा के आगे हारा, परमात्मा के आगे जीता। आखिर साथ मेरे को परमात्मा देगा या क्रोध आत्मा देगी? उसमें तो मैं पास हो गयी ना! तो बाबा की आज्ञा समझ करके अगर हम ठीक चलते हैं तो उसका फल जरूर मिलता है। उसी समय हमको खुशी होती है वाह! बाबा ने



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

मेरा नहीं है तो 'मैं-पन' भी खत्म। मैं-पन ही तो सारा नुकसान करता है। मैंने किया, मैं बहुत गुणवान हूँ, मेरे में यह बहुत शक्ति है, मेरे में शक्ति आयी कहाँ से? पहले थी क्या! परमात्मा की देन है।

कितनी शक्ति दी हम जीत गये और उसमें अहम नहीं। मैं बहुत होशियार हो गयी, नहीं। बाबा ने शक्ति दी, बाबा की देन है, प्रसाद है। प्रसाद को कोई अपना नहीं समझता है। चाहे बनाने वाली वही माता हो, उसी ने भोग लगाया हो, लेकिन प्रसाद जब हो गया तो कोई नहीं कहेगा मेरा है। बांट रही हूँ। मेरा नहीं है तो 'मैं-पन' भी खत्म। मैं-पन ही तो सारा नुकसान करता है। मैंने किया, मैं बहुत गुणवान हूँ, मेरे में यह बहुत शक्ति है,

मेरे में शक्ति आयी कहाँ से? पहले थी क्या! परमात्मा की देन है। तो बाबा-बाबा कहते चलो, बाबा ने यह दिया, बाबा ने यह दिया...। बस, बाबा दिल से निकले तो बेड़ा पार। और कुछ बोल नहीं सकते हो, एक प्वाइंट भी रिपीट नहीं कर सकते हो लेकिन दिल से बाबा-बाबा कहते रहते हो तो आप नम्बर ले लेंगे, क्योंकि बाबा शक्तियां देगा, समय पर मदद करेगा, मैं सच्ची दिल से बाबा का हूँ, तो सच्ची दिल पर साहिब राजी जरूर होगा। बंधा हुआ है मेरी सच्चाई पर। मुझे नहीं देगा तो किसको देगा और वह दाता है, उसको क्या कमी है जो हमको न देवे। इसीलिए बाबा कहते हैं वर्तमान समय जो बातें हैं, उन्हें रियलाइज़ करो। रियलाइज़ अपने को करना है दूसरे को नहीं क्योंकि बाबा ने एक बार कहा है कि हमारे बच्चों की दूर की आँख बहुत तेज है, नज़दीक की आँख थोड़ी धुंधली है, वह तेज नहीं है। अपने को देखने की आँख हिलती है और दूसरे को देखने की, दूर की नज़र बड़ी तेज है। दूसरे की कमी को मैं बढ़ाऊंगी, विस्तार भी करूंगी, रामकथा बनाके सुनाऊंगी। लेकिन अपनी कमी छिपाऊंगी, दबाऊंगी तो ये सेल्फ रियलाइज़ तो नहीं हुआ ना!

## त्यर्थ संस्कारों को परिवर्तन कैसे करें...!

**प्रश्न : संस्कारों को बदली किया जा सकता है या नहीं? किस आधार पर हम परख सकते हैं कि मेरे संस्कार ठीक हैं?**

**उत्तर :** ज्ञान का अर्थ ही है पुराने संस्कारों को बदलना। हम संस्कारों को ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। जहाँ परखने की बात है वह तो सहज है। यूँ तो अपने संस्कारों को जान सकते हैं परन्तु फिर भी समझें नहीं पता पड़ता तो जैसे किसके गुण वर्णन करते हैं - फलाने में यह यह गुण हैं, तो देखना है मेरे में वे गुण हैं? इसको कहा जाता है अपने को परखना। अगर मैंने अपने संस्कार को जान लिया तो फिर उसको ज्ञान से परिवर्तन करना है। परिवर्तन किया तो उसको

कहा जायेगा रियलाइज़ किया। अगर परिवर्तन नहीं किया तो कहेंगे पूर्ण रूप से रियलाइज़ नहीं हुआ है। जिस संस्कार को मैंने रियलाइज़ किया कि यह ठीक है, वह देखना है- सबको ठीक लगता है? यदि औरों को वह ठीक नहीं लगता तो उसे ठीक नहीं कहेंगे। हम देखते हैं यह मेरा संस्कार औरों को रूकावट डालता है तो समझना चाहिए इसको बदलना जरूरी है। अब उसको बदलने के लिए ज्ञान की शक्ति चाहिए। एक है अपने से रियलाइज़ करना, दूसरा है कि दूसरे हमको रिजल्ट में राइट नहीं समझते हैं तो रियलाइज़ माना मैं उसको चेंज करूँ।

यदि हमारा संस्कार सर्विस का सबूत नहीं देता है तो इसका मतलब कि वह संस्कार हमारा ठीक नहीं है उसको हमें बदलना है। नहीं बदलते तो ज्ञान से रियलाइज़ नहीं किया है। हमें संस्कार को उस दृष्टि व उस अन्तर में देखना है कि सर्विस करता है व नुकसान करता है।

**प्रश्न : कई बार ऐसा होता है कि अपने को परख भी लेते परन्तु फिर निर्णय नहीं कर सकते। उसको क्या कहा जाये?**

**उत्तर :** इसे ज्ञान की कमी ही कहेंगे। इस कमी को भरने के लिए रोज जो बाबा की मुरली, बाबा की शिक्षायें, समय-समय पर जो बाबा युक्तियां बतलाते हैं उन्हें स्वयं प्रति समझकर उसकी गहराई में जाओ। लक्ष्य हो कि यह बाबा का एक-एक रत्न मुझे प्रैक्टिकल में लाना है। इस प्रकार अटेन्शन रखने से भी कमी भर सकती है।

ज्ञान की कमी को भरने के लिए जो शक्ति चाहिए उसके लिए मैं समझती हूँ एक तो बाबा की मुरली बहुत जरूरी है और दूसरा जो ऐसा शक्तिशाली हो उसके संग से भी खुद में शक्ति भर सकते हैं। जितना-जितना उसके संग में

कर्तव्य करते जायेंगे तो अपने में शक्ति भरती जायेगी। हरेक कमजोरी को मिटाने के लिए मैं समझती हूँ रूहानी नशा जरूर चाहिए।

**प्रश्न : अपने में निर्बलता व कमजोरी उत्पन्न ही न हो उसके लिए क्या करना चाहिए?**

**उत्तर :** इसके लिए अमृतवले के योग और मुरली पर पूरा-पूरा ध्यान दो। कभी भी किसी भी कारण से यह मिस न हो। दूसरा - कभी भी अपनी कमजोरी का वर्णन न करो, सदा अपनी हिम्मत को देखो। अपनी हिम्मत पर निश्चय। निश्चय और बाबा-बाबा की धुन लगी हुई हो तो निर्बलता का खात्मा होता जायेगा। मेरा बाबा बैठा है। हर बात में मुझे बाबा जरूर मदद करेगा। बस, बाबा बैठा है फिर क्या।

दृढ़ संकल्प कमजोरी को मिटा देता है। दृढ़ संकल्प करो कि मुझे करना है तो देखो कर लेंगे। दृढ़ संकल्प किया कि हमें स्वराज्य लेना है तो ले ही लिया ना। हम तो सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे हैं, हमारा दृढ़ संकल्प है हमें विश्व का कल्याण करना ही है, तो हम क्यों नहीं कर सकते। है सारी दृढ़ संकल्प की बात।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

## हमारे जैसा भाग्य और किसी का कहाँ...!

आँख दिखायेगा। बच्चों को जगाती नहीं हो। बच्चे उठेंगे, बाप को याद करेंगे तो बाप खुश होगा। ऐसे मात-पिता सारे कल्प में नहीं मिलते हैं।

आज बाबा ने कहा है बच्चे महाभारत लड़ाई लगनी है, बॉम्ब छूटने हैं, बाढ़ें आनी हैं। यह सब समाचार अभी सुन और देख रहे हैं। बाबा ने पहले से ही सब बता दिया है।

लोगों का सारा पैसा बॉम्ब बनाने, मारने और मरने में जा रहा है। काम और क्रोध की अपास में बहुत

अच्छी दोस्ती है। ये दोनों ही पूरी दुनिया को नर्क बनाने वाले हैं। लोभ और अहंकार भी साथ में हैं। परन्तु बाबा हमको कहते हैं, योग अग्नि, लगन की अग्नि ऐसी अन्दर से हो जो खुद योगी का अंग-अंग शीतल हो जाए, तपत बुझती जाए, औरों को अपना रंग देता जाए। लगन की अग्नि से योगी के अंग शीतल हो जाते हैं। सूर्य की किरणों से, बादल सागर से पानी

खींचते और बरसाते हैं। सिर्फ सूर्य अपनी किरणों फेंकता रहे तो सृष्टि जल जाये। इसलिए किरणों से पानी खींचते हैं, फिर बरसता है। इतना बारिस करते हैं जो ठण्डक आ जाती है, किचड़ा साफ हो जाता है, हरियाली फैल जाती है, स्वच्छ पानी मिल जाता है। हम कौन हैं, पूछो अपने आप से। बाबा कहता है आओ मेरे बच्चे,

बादल आओ। मैं देखती हूँ, ऐसा नशा ही नहीं चढ़ता है कि मैं कौन हूँ!

अरे एक घण्टा तपस्या में बैठो, बुद्धि और कहीं नहीं जाये, सेवा में भी नहीं, भले कुछ खाओ नहीं। कराची में चार-चार घण्टा लगातार बैठते थे, हिलने की भी मना थी।

अभी देखो जहाँ-तहाँ बीमारियों का कारण पानी है और खाने के लिए देखो शो वाली चीज हैं, उसमें कोई ताकत नहीं है। सब कुछ झूठ है, सच तो है ही नहीं। मन में भी झूठ, सोचने और बोलने की आदत है। सच सुनना और सच सुनाना। तुम राजाई पाते हो, सच सुनते हो और सच सुनाते हो। उसके बीच में क्या सोचते हो। बीच में कोई काम भी याद आया तो झूठ मिक्स हो जाता है। मुरली सुनते अगर कोई काम याद आया, तो योगयुक्त नहीं हो, फेला। बाबा के दिल से हमको पास मार्क्स नहीं मिलेगी।



राजयोगिनी दादी जानकी जी



# इच्छाओं को कम करें और मन को शान्त रखें

एकाग्रता है तो शिव बाबा से योग लगेगा। शिव बाबा है बिन्दु रूप, सूक्ष्मातिसूक्ष्म। उसके साथ आपका मन जुड़ेगा। अगर मन इधर-उधर भागेगा तो जुड़ेगा कैसे? मन इधर-उधर भागता क्यों है? क्योंकि एक तो उसको एकाग्र करने का अभ्यास नहीं है, दूसरा कुछ इच्छायें रही हुई हैं। अभी भी हमारे मन में इच्छायें रही हुई हैं। बहुत सारी इच्छायें रही हुई हैं। मुझे फलाने विभाग का अध्यक्ष बना दें, और कुछ नहीं तो फलाने कार्यालय का प्रबंधकर्ता बना दें। ये नहीं तो वो बना दें। यह है एक इच्छा। दूसरी इच्छा है कि फलाना व्यक्ति विदेश हो आया, उसकी दूसरी बारी भी आ गई, हूँ तो मैं भी पुराना, इस साल मेरी बारी लगी नहीं। क्या बात है? उनकी इच्छा यह है कि जाकर घूम आये। कहते हैं कि सागर के ऊपर से एक पक्षी उड़ रहा था। उड़ता रहा, उड़ता रहा। जहाँ भी देखो उसको पानी ही पानी दिखाई पड़ रहा था। बैठने के लिए कोई जगह दिखायी नहीं पड़ी। फिर उसने देखा कि एक जहाज जा रहा था, उसके ऊपर बैठा। फिर वह उड़ने लगा, उड़ता रहा, कोई ठिकाना नहीं, थककर फिर आकर उसी जहाज पर बैठ गया। अरे आत्मन्, इस मन रूपी पक्षी को कहीं कोई ठिकाना है नहीं। तुम ढूँढकर देख लो। कोशिश करके देख लो। हम सब जानते तो हैं, दूसरों को सुनते भी हैं लेकिन प्रैक्टिकल अपने लिए करते तो नहीं हैं। अगर हमारी इच्छायें बड़ी तीव्र गति की बनी रहेंगी तो योग लग नहीं सकता।

इच्छाओं को बिल्कुल खत्म नहीं कर सकते, उनको कम करो और उनकी गति को कम करो। क्योंकि इच्छा की जननी भी इच्छा ही है और इच्छा को रोकने वाला तरीका भी इच्छा ही है। इच्छा के बिना इच्छा को रोक



राजयोगी ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

**इच्छा का जन्म भी इच्छा से ही होता है और इच्छा का अन्त भी इच्छा से ही होता है। कठिनाई यही है आप यह कोशिश कीजिए कि 'मेरा तो एक शिव बाबा और कोई नहीं'। बाबा ही मेरा संसार है। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।**

भी नहीं सकते। देखिये यह विचित्रता कि इच्छा का जन्म भी इच्छा से ही होता है और इच्छा का अन्त भी इच्छा से ही होता है। कठिनाई यही है आप यह कोशिश कीजिए कि "मेरा तो एक शिव बाबा और कोई नहीं। बाबा ही मेरा संसार है। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। बाबा मिल गया, उसने मुझे भरपूर कर दिया, मैं मालामाल हो गया।" देश जाना-विदेश जाना, उसमें क्या रखा है! आप जाकर देख लीजिए, सब आदमी एक

जैसे ही हैं। सबकी नाक, आँख, कान इसी तरह के हैं। रंग का भेद जरूर है, थोड़ा बहुत बनावट में है फर्क। किसी की नासिका थोड़ी लम्बी या थोड़ी चौड़ी। मानव स्वभाव पूरी दुनिया में एक जैसा है। चीज वही है, किसी के ऊपर एक रंग का प्लास्टिक चढ़ा हुआ है, किसी के ऊपर दूसरे रंग का। वही नेचर है, उसी तरह के आदमी हैं। लेकिन लोग भरमा देते हैं। जब आपस में मिलते हैं तो एक दूसरे से पूछते रहते हैं कि आज तक तुमने कितने देश देखे? वह कहेगा, छह देश। फिर यह कहेगा कि ये तो कुछ भी नहीं, फलाना दस देश देखकर आया है। तुमको भी दस तो देखने चाहिए। दस देखने के बाद कहेगा, अरे, कम से कम बारह, एक दर्जन तो देखने चाहिए। अरे भाई, तुम्हारी यह इच्छा मिटने वाली नहीं है। काहे को भागता-दौड़ता है? आपने सुना होगा, एक पौराणिक कथा है। शंकर जी ने कार्तिकेय और गणपति से पूछा कि तुम दोनों में विश्व का चक्कर लगाकर मेरे पास कौन पहले पहुंचेगा? सबने सुना है ना!

बेचारा कार्तिकेय मोर लेकर भागा-भागता और भागता ही रहा। गणपति भागा ही नहीं, चुपचाप खड़ा रहा। शंकर जी ने उससे पूछा, क्या बात है भाई, तू तो भागता नहीं है, यह कैसे चलेगा? तब गणपति कहता है, आप हैं जहाँ पर, मेरे लिए सारी दुनिया वहीं है। समझा? तो यह समझने की बात है। अरे, मिल गया बाप, मिल गयी सारी दुनिया। हम यज्ञ में इसीलिए आये हैं कि बाबा आये हुए हैं। जिसको ढूँढने के लिए तो हम इधर-उधर भागते थे, भटकते थे। जो जहाँ आता है वहीं हम बैठे हुए हैं, तो और कहाँ बाहर कलियुग में जाना है? क्या करना है? जो काम हमारा बाप कर रहा है, वही काम हमें भी करना है।



**विजयवाड़ा-आ.प्र.।** आंध्र प्रदेश सचिवालय में नए मुख्यमंत्री माननीय एन. चंद्रबाबू नायडू को बधाई एवं माउण्ट आबू में होने वाले वैश्विक शिखर सम्मेलन का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पद्मजा बहन, ब्र.कु. जया बहन तथा अन्य।



**छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)।** भारत सरकार के नवनिर्वाचित केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री पद ग्रहण करने के पश्चात् प्रथम बार नगर में आने पर ब्र.कु. रमा बहन एवं ब्र.कु. रीना बहन ने उन्हें तिलक लगाकर, शॉल एवं गुलदस्ता भेंट कर बधाई व शुभकामनाएं दी और उनका सम्मान किया तथा नशा मुक्ति अभियान के तहत कार्यक्रमों की चर्चा करने के साथ ही ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउण्ट आबू में आयोजित होने वाले ग्लोबल सम्मिट में आने का निमंत्रण भी दिया। इस मौके पर भाजपा पूर्व जिलाध्यक्ष पुष्पेंद्र प्रताप सिंह, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अर्चना गुड्डू सिंह, ब्र.कु. कल्पना बहन व ब्र.कु. सुमन बहन उपस्थित रहे।



**छोटा उदुपुर-गुज.।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर खुटालिया पुलिस परेड ग्राउंड में आयोजित कार्यक्रम में छोटा उदुपुर लोकसभा सांसद जशु भाई राठवा, जिला पंचायत प्रमुख, श्रीमती मलका बहन पटेल, जिला कलेक्टर, अनिल भाई धामेलिया, जिला विकास अधिकारी तथा स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मोनिका बहन सहित अन्य गणमान्य व स्थानीय लोग शामिल रहे।



**केशोद-गुज.।** शिव भोलेनाथ भंडारे के भूमि पूजन कार्यक्रम के दौरान परमात्म स्मृति में ब्रह्माकुमारीज गुजरात जोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, सबजोन इंचार्ज ब्र.कु. दमयंती दीदी, ब्र.कु. रूपा बहन, ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य।



**बिलासपुर-राज किशोर नगर(छ.ग.)।** ब्रह्माकुमारीज के शिव अनुराग भवन सेवाकेंद्र में 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यातायात नीरज चंद्राकर, सीएसपी सिविल लाइन उमेश गुप्ता व सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे। इस अवसर पर 400 वृक्ष लगाकर संरक्षित करने वाले इंद्रजीत सोहल को उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में एएसआई उमाशंकर पाण्डे, रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी ओमप्रकाश जी, नटवर भाई व कैलाश भाई सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।



**ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू।** ज्ञान सरोवर परिसर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज के कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा 'प्रेम-शांति और सद्भाव' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन के शृभारंभ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हरियाणा से आये माटी कला बोर्ड के अध्यक्ष ईश्वर सिंह, विशिष्ट अतिथि बॉलीवुड के सिंटा के सचिव हेमंत पांडे, बॉलीवुड के प्रख्यात लेखक एवं निर्देशक सूरज तिवारी, टेलीविजन की प्रख्यात एक्ट्रेस नीलू कोहली, बॉलीवुड की एक्ट्रेस अंजली अरोरा, ब्रह्माकुमारीज के अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका तथा ज्ञान सरोवर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी, कला एवं संस्कृति प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी, प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. दयाल भाई, प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. सतीश भाई, भावनगर से आई राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. तुषि बहन, करनाल से आई वरिष्ठ राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी सहित देश के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में कलाकार, शिल्पकार तथा कला और शिल्प से जुड़े हुए सिने जगत के अदाकारों ने भाग लिया।



**मुम्बई-लोखंडवाला।** वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. क्रीना दीदी ने बिग बॉस 17 फेम अभिनेत्री ईशा मालवीय से मुलाकात कर उन्हें ब्रह्माकुमारीज की गतिविधियों से अवगत कराया तथा संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देते हुए ईश्वरीय साहित्य भी भेंट किया। इस अवसर पर डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके मौजूद रहे।



**रीवा-म.प्र.।** ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में आयोजित 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम में वन मंडल अधिकारी अनुपम शर्मा, दैनिक जागरण के वरिष्ठ संपादक देवेन्द्र सिंह, प्रो. ए.पी. सिंह, हाजी ए.के. खान, डॉ. आरती तिवारी, डॉ. ममता नरेंद्र सिंह, मुख्य अभियंता शेर बहादुर सिंह परिहार, डॉ. सुनीता पांडे, शिव सिंह किसान सभा के अध्यक्ष एवं संरक्षक रामजीत सिंह, जन अभियान रीवा के समन्वयक अमित अवस्थी, ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्र.कु. डॉ. अर्चना बहन व ब्र.कु. नम्रता बहन सहित क्षेत्र के अनेक गणमान्य नागरिक व बुद्धिजीवी लोग शामिल रहे।



**भोपाल-नीलबड(म.प्र.)।** ज्योतिष मठ संस्थान भोपाल एवं कालिदास संस्कृत अकादमी उज्जैन द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के सभागार में 'भारत को विश्व गुरु बनाने में ज्योतिष की भूमिका' विषय पर आयोजित पंचम दो दिवसीय कालिदास 'राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन' को ब्रह्माकुमारीज की ओर से राजयोगिनी ब्र.कु. नीता दीदी ने सम्बोधित करते हुए सभी को ईश्वरीय संदेश दिया। सम्मेलन में भगवान पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर 1008 स्वामी श्री अवधूत बाबा अरुण गिरी जी महाराज, विधायक रामेश्वर शर्मा, ज्योतिष मठ संस्थान के संचालक पंडित विनोद गौतम, ज्योतिष महर्षि पंडित अयोध्या प्रसाद गौतम एवं पूर्व मंत्री व ज्योतिषी पंडित नंदकिशोर पुरोहित सहित देश के अनेक ज्योतिषी विद्वान शामिल रहे।



# पृथ्वी भर की सारी सम्पदायें भी आपकी सोच के आगे नगण्य हैं...

चेहरे का सौंदर्य 15 प्रतिशत ही जीवन की किसी सफलता में आधारमूर्त बनता है, जबकि सोच और जीवनशैली का योगदान 85 प्रतिशत है। व्यक्ति की जैसी सोच होगी वैसे ही उसके कर्म होंगे। वैसा ही उसका चरित्र बनेगा।

स्वास्थ्य बेशकीमती दौलत है। स्वस्थ जीवन का स्वामी होने के लिए जितना शरीर का स्वस्थ होना जरूरी है उतना ही जरूरी मनोमस्तिष्क का स्वास्थ्य है। स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मन का आधार बनता है, और स्वस्थ मन ही स्वस्थ शरीर का निमित्त। शारीरिक स्वास्थ्य की उपलब्धि के लिए दुनिया भर के बहुत चिकित्सक हैं तो कई चिकित्सालय भी हैं। सात्विक और संतुलित आहार, व्यायाम, स्वच्छ जलवायु, शरीर के स्वास्थ्य को उपलब्ध करने का यह सहज सोपान है। सम्पूर्ण स्वास्थ्य की दृष्टि से शरीर स्वास्थ्य भी उतना ही जरूरी है।

अगर हम शरीर की दृष्टि से देखें तो इंसान शरीर से बहुत ही निर्बल और असहाय नजर आता है। वह न तो किसी चिड़िया की तरह आसमान में उड़ सकता है और न ही किसी मछली की तरह पानी में तैर सकता है और न ही किसी तितली या भंवरे की तरह फूलों पर मंडरा सकता है। मनुष्य के पास न तो बाज-सी दृष्टि है और न बाघ-सी ताकत, न ही चीते-सी फूर्ति है। इंसान की हैसियत इतनी-सी होती है कि छोटा-सा मच्छर, एक छोटा-सा बिच्छू भी डंक मार दे तो वो तिलमिला उठता है। उसकी काया उसी समय धराशायी हो जाती है।

इंसान अपनी शरीर की दृष्टि से बहुत समर्थ, सक्षम नहीं होता मगर कुदरत ने मनुष्य को एक बहुत बड़ी अकृत संपदा दी है। जिसके आगे पृथ्वी भर की सारी संपदायें तुच्छ और नगण्य हैं। वह है 'सोचने की क्षमता'। अगर मनुष्य के जीवन से सोचने की क्षमता को अलग कर दिया जाये तो शायद मनुष्य पशु तुल्य ही होगा और किसी जानवर को सोचने की क्षमता प्रदान कर दी जाए तो उसकी स्थिति मनुष्य के समकक्ष होगी।

## सोच ही मनुष्य है...

मनुष्य के पास विचार शक्ति एक ऐसी अनुपम सौगात है जिसके चलते वो धरती के सारे पशु और पक्षियों के बीच अपने आप में सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ कृति बन सकता है। आप जरा ऐसे इंसान की कल्पना करें कि जिसके पास सोचने की क्षमता नहीं है। आप ताज्जुब करेंगे, तब हर मनुष्य चाहे वो बालक हो या प्रौढ़, वनमानुष का चेहरा लिए हुए होगा। कोई व्यक्ति इसलिए जड़बुद्धि कहलाता है क्योंकि उसका मस्तिष्क विकसित नहीं हुआ है। मस्तिष्क की अपरिपक्वता व्यक्ति को पूरे शरीर से अंपंग भी बना देती है। जीवन-विज्ञान कहता है कि व्यक्ति का



मस्तिष्क विकसित हो चुका है, वह भले ही हेलेन केलर की तरह अंधा, बधीर या मूक हो, लेकिन ऐसा सृजन कर सकता है जो अविस्मरणीय हो, अनुकरणीय हो।

सोच ही मनुष्य है, सोच को अगर किसी भी जन्तु के साथ जोड़ दिया जाये तो वह भी मनुष्य हो जायेगा। इंसान के पास जीवन की एक ऐसी अनुपम सौगात है, फिर भी कोई इंसान अपनी सोच को स्वस्थ रखने के लिए सचेष्ट(प्रयत्नशील) नहीं है। अगर शरीर जुकाम या बुखार से ग्रस्त हो जाये तो हम तुरंत डॉक्टर की तलाश करते हैं, मगर अपनी विकृत,

परिष्कृत सोच को संस्कारित करने के लिए, उनको स्वस्थ बनाने के लिए भला कितना उपाय कर पाते हैं! जीवन में पाई जाने वाली किसी भी सफलता का अगर वास्तविक रूप से किसी को श्रेय दिया जाना चाहिए तो वह व्यक्ति की अपनी सोच और कार्यशैली है।

## आपकी सुंदरता का आधार आपकी सोच...

ज्यादातर व्यक्ति अपने चेहरे की सुंदरता और

स्मार्टनेस पर ही अधिक ध्यान देता है लेकिन किसी का भी ध्यान मन की खूबसूरती और स्वास्थ्य पर नहीं जाता। जबकि चेहरे का सौंदर्य पंद्रह प्रतिशत ही जीवन की किसी सफलता में आधारमूर्त बनता है, किंतु सोच और जीवनशैली का योगदान 85 प्रतिशत है। व्यक्ति की जैसी सोच होगी वैसे ही उसके कर्म होंगे। वैसा ही उसका चरित्र बनेगा। जो व्यक्ति अपने चरित्र को निर्मल रखना चाहता है, अपनी आदतों और कर्मों को सुधारना चाहता है वो अपना ध्यान जड़ों की ओर आकर्षित करेगा। जब तक वो जड़ों तक नहीं पहुंचेगा, वह शरीर से स्वस्थ होकर भी मन से हमेशा रूग्ण बना रहेगा। जिस दिन तुम अपने मन से स्वस्थ हो जाओगे, तुम्हारा शरीर अपने आप स्वास्थ्य के सोपानों को पार करने लग जायेगा।

## बेहतर कार्यों के लिए बुवाईं...

मनुष्य का मस्तिष्क एक बगीचे की तरह ही है। जिसमें अगर अच्छे बीज बोओ तो अच्छे फल और फूल बनेंगे। और बीज कैक्टस और कांटो के होंगे तो वो कैक्टस और कांटे ही पैदा करेंगे। अगर बगीचे में कुछ भी बोया गया न हो तो निश्चित है कि घास-फूस तो उग ही जायेगी। इंसान दो तरफ प्रयास करते हैं, पहला, अच्छे बीज मस्तिष्क के बगीचे में बोये जायें, दूसरा, अवांछित, खरपतवार, घास-फूस उग आई है, उसे उखाड़ फेंके। ऐसा नहीं कि केवल प्रेम और सम्मान के ही बीज बोने हैं, वरन क्रोध, वैर की जो अनचाही झाड़ियां उग गई हैं, उन्हें भी समूल नष्ट करना होगा।

व्यक्ति माली की तरह मस्तिष्क के बगीचे की निराई-गुड़ाई का पूरा-पूरा ख्याल रखे, वरना जंगली घासों ऐसी जम जायेंगी कि उन्हें निर्मूल(जिसमें जड़ न हो) करना मुश्किल होगा। आपका अपना दृष्टिकोण आध्यात्मिक बनाना होगा जिससे आप उन्नत संकल्पों को पकड़ सकें जो ऐसी कुछ बातें मिल जायें जो काम की हों। जो भी सार मिले उसे ग्रहण कर लें और थोथा उड़ा दें। हर स्वीकारे सोच और विचार को ग्रहण कर लें और शेष को एक तरफ कर दें।

जैसा बीज बोओगे वैसा ही फल पाओगे। आम के बीज बोओगे तो आम के फल मिलेंगे। बबूल के बीज बोओगे तो बबूल के फल मिलेंगे। जैसा आप सोचेंगे वैसा ही आपके जीवन में घटित होगा।



**ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू।** ज्ञानसरोवर के हारमनी हॉल ऑडिटोरियम में ब्रह्माकुमारीज के प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा सम्पूर्ण देश में प्रशासन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सुप्रशासन एवं मूल्यनिष्ठ प्रशासन की कला सिखाने के लिए ब्रह्माकुमारी टीचर्स बहनों की चार दिवसीय बी.के. टीचर्स ट्रेनिंग एवं योग भट्टी में देशभर से 450 से अधिक ब्र.कु. टीचर्स बहनें शामिल हुईं। शुभारंभ कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज प्रशासक प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, भोपाल से आई प्रशासक प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी, ज्ञानसरोवर परिसर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रभा दीदी, प्रशासक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. हरीश भाई, मुम्बई से आये ब्र.कु. ई.वी.गिरीश, ओआरसी गुरुग्राम से आई ब्र.कु. ख्याति बहन व ब्र.कु. विधात्री बहन, सिरसी कर्नाटक से आई ब्र.कु. वीणा बहन आदि शामिल रहे।



**कटनी-गोपाल नगर(म.प्र.)।** किड्स केयर स्कूल के प्रधानाचार्य, शिक्षक, स्टाफ व विद्यार्थियों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. भगवती बहन, ब्र.कु. सृष्टि बहन, ब्र.कु. अजय भाई तथा अन्य।



समय के इशारे को समझें...



राजयोगिनी ब.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

जैसा कि आपने पिछले अंक में पढ़ा कि बाबा ने एक मुरली में कहा कि क्रोध एक कमजोरी है लेकिन सोचो कि ये क्रोध रूपी कमजोरी मेरे जीवन में क्यों आई? कौन-सी शक्ति का अभाव है? तो बाबा ने बताया उसमें कि शांति की शक्ति का अभाव, सहनशक्ति का अभाव और तीसरी है अधीरता। कई होते हैं जल्दी करो, जल्दी करो, और अगर कोई नहीं करता है तो गुस्सा आता है। धीरज नहीं है तो धैर्यता की कमी। अब आइडेंटिफाय किया कि क्रोध रूपी कमजोरी जो है वो इन तीन

## कर्मभोग पर विजय प्राप्त करने के लिए पहले कमजोरियों को समाप्त करें...

शक्तियों के अभाव के कारण है। अब क्या करूं?

अब मुझे लिस्ट बनाना है तो कम से कम कितनी कमजोरियां होंगी हरेक के जीवन में आठ-दस? दस ले लेते हैं चलो। अब मान लो कि दस कमजोरियां हैं और उसके लिए, हर कमजोरी के लिए दो या तीन शक्तियों का अभाव है। तीन-तीन शक्तियां भी गिनती कर लो हरेक के लिए तो तीस शक्तियां हो गईं। उसमें कुछेक तो रिपीट होंगी। अच्छा जो रिपीट हो रही है इसका मतलब वो प्रायोरिटी है जिसपर मुझे वर्कआउट करना है।

आज दुनिया में लोग कितने बॉडी कॉन्शियस हैं। बॉडी के लिए कितना करते हैं। हम अपनी कमजोरी के लिए वर्कआउट कितना कर रहे हैं? कुछ भी नहीं कर रहे हैं। इसलिए जो शक्तियों

की लिस्ट निकाली कि ये-ये शक्तियों का अभाव है। उसमें मान लो कई जगह शांति की शक्ति रिपीट हुई आपकी तो अमृतवेले एक सप्ताह तक विशेष उस शक्ति का बाबा से आह्वान करो। अपने अन्दर भरो और भरते जाओ। हफ्ते के बाद अपना रिजल्ट देखो कि कितना भरा है या अभी भी वही हाल है। अच्छा दो सप्ताह कर लो उस शक्ति का आह्वान। फिर सहनशक्ति का दो सप्ताह आह्वान कर लो। फिर धैर्यता की शक्ति पर दो सप्ताह आह्वान कर लो। छह सप्ताह जिस शक्ति पर वर्क आउट करेंगे तो कमजोरी रहेगी या खत्म होगी? खत्म होगी।

जैसे बाबा मुरली में पृच्छते हैं डेट फिक्स करो, कब तक? हर चीज के लिए डेट फाइनल करते हैं। तो अगर हम इस तरह से अपना वर्कआउट शुरू करें तो होगा या नहीं होगा? तो इसीलिए ये विशेष प्लैन, समय के इशारे को समझते हुए अपनी कमजोरियों को भरते जाना है। और भरके फिर जैसे-जैसे हम अभ्यास करते जायेंगे अशरीरी

कर्मभोग के ऊपर विजय प्राप्त करने के लिए इतना योगबल अपने अन्दर जमा करना है। और जितना योगबल अन्दर में जमा होगा तो आप खुद महसूस करेंगे कि कैसे आप उस कर्मभोग के ऊपर भी विजय पायेंगे।

होने का एक सेकण्ड में तो अन्तिम घड़ी आयेगी, अब कोई कमजोरी रही ही नहीं मेरा पेपर लेने के लिए। तो सहज ही अशरीरी बनना आसान होगा या नहीं होगा? तो नम्बरवन कौन लेगा? सिरियसली अपने आपको देखो क्योंकि बाबा की आश है कि मेरा हर बच्चा सम्पन्न हो जाये।

दूसरी बात समय के इशारे को देखते हुए जो चारों तरफ जिस तरह समय

चलता जा रहा है, उस हिसाब को देखते हुए जैसे ब्रह्मा बाबा के अन्तिम समय के लिए जब बाबा से पूछा गया कि आपकी अन्तिम अवस्था क्या थी? तो बाबा ने उस समय बताया कि कर्मभोग और कर्मयोग की लड़ाई थी। तो कुछ पास्ट के कर्म हैं जिस कारण से कर्मभोग आ सकता है। चाहे छोटा-सा भी आये। जिस तरह ब्रह्मा बाबा के सामने खांसी का भी आया। तो कोई भी छोटा-मोटा कर्मभोग आ सकता है। और वही कारण बनेगा शरीर से अलग होने का। तो इसीलिए अपने अन्दर योगबल को इतना बढ़ायें कि उस योगबल से उस कर्मभोग के बल को समाप्त कर सकें। ताकि अन्तिम समय वो जो है कर्मभोग हमें दर्द पहुंचाना चाह रहा है लेकिन हमारा योगबल, बाबा के साथ की जो लगन है, वो जो प्रीत है वो इतनी अधिक हो कि अन्तिम समय वो भी मेरे लिए विघ्न न बने। मेरी रूकावट का कारण न बने। ये तैयारी भी मुझे अपनी करनी है।

तो पहली, कमजोरी के ऊपर विजय प्राप्त करने के लिए, दूसरी, कर्मभोग के ऊपर विजय प्राप्त करने के लिए इतना योगबल अपने अन्दर जमा करना है। और जितना योगबल अन्दर में जमा होगा तो आप खुद महसूस करेंगे कि कैसे आप उस कर्मभोग के ऊपर भी विजय पायेंगे। जो ब्रह्मा बाबा का अनुभव है वो हम सबका अनुभव हो जायेगा। ये तैयारी मुझे करनी है।

## सेल्फ हेल्प



एक विचारणीय विषय है। सोचना पड़ेगा इसपर। हम जब किसी से बात करते हैं धर्म की, पंथ की, समाज की, तो कहते हैं कि समाज में ऐसा चल रहा है तो हमको ऐसा सोचना पड़ता है। समाज की कुरीतियां, समाज की प्रथा, समाज की एक-एक बात हम सब उस बात को लेकर कहते हैं कि समाज में ये चल रहा है ना हमको ये करना पड़ेगा। ये एक बात सिद्ध करता है, बताता और जताता है कि समाज हमसे बना है या हम समाज से बने हैं? आप देखो समाज की सबसे छोटी इकाई को मनुष्य कहा जाता है। और वो मनुष्य जब इस जीवन में है, जब इस जीवन

## हमसे संसार है न कि हम संसार से हैं

में कार्य कर रहा है तब तक वो समाज के साथ है अगर वो मनुष्य ही न हो तो उसके लिए तो समाज नहीं है ना। ऐसे ही हम जो भी सोच रहे हैं, बोल रहे हैं, कर रहे हैं वो सबकुछ समाज में रहकर नहीं बोल रहे हैं, समाज से अलग रहकर बोल रहे हैं। बातें समाज में जा रही हैं तो जैसा मैं एक इकाई हूँ, या एक यूनिट हूँ समाज का और अगर मेरे चाल, चलन, व्यवहार, ये तीनों चीजों में बदलाव आयेगा तो इसका इफेक्ट कहाँ पड़ेगा? समाज में। इसलिए समाज को कभी भी दोष देकर हम बच नहीं सकते कि समाज ने हमारे साथ ऐसा किया, समाज में लोग ऐसे हैं, नहीं हम ऐसे हैं इसलिए समाज भी वो वाला वातावरण बनाता जा रहा है। तो समाज का वातावरण बदलना हमारे हाथ में है क्योंकि हमसे समाज है। समाज से हम नहीं हैं। तो अगर हम अपने अन्दर के वातावरण को बदलें, शांति, प्रेम, पवित्रता वाला वातावरण रखें तो उस वातावरण से बाहर का वातावरण ऑटोमेटिकली बदलता चला जायेगा। और वो वातावरण समाज में एक पैरामीटर सेट करेगा जिसपर चलकर सभी बड़े खुश होंगे। देखिए समाज के एक-एक इकाई की जिम्मेवारी है कि अपनी मदद खुद करें और अपने आपको समाज से जोड़कर नहीं समाज से अलग होकर देखें तो समाज के लिए कुछ कर पायेंगे।



**नवसारी-गुज.** गुरु पूर्णिमा के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी का सम्मान करने के पश्चात् उपस्थित हैं मीनल देसाई, प्रमुख नवसारी नगरपालिका, शीतल सोनी, भाजपा प्रदेश मंत्री, तन्वी बहन, महिला मोर्चा प्रमुख भाजपा, अलका बहन, कारोबारी सदस्य महिला मोर्चा भाजपा तथा राजयोगिनी ब्र.कु. भानु बहन।



**राजकोट-गुज.** ब्रह्माकुमारीज के एजुकेशन विंग द्वारा हैप्पी विलेज रिट्रीट सेंटर में आयोजित दो दिवसीय 'राजयोग मेडिटेशन कोर्स ट्रेनिंग' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्रह्माकुमारीज गुजरात जोन डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, पोप्यूलर स्कूल त्रंबा की डायरेक्टर शर्मिला बहन, राधिका स्कूल के प्रिंसिपल भरत भाई ढोलरिया, जयपुर से आई ब्र.कु. चित्रा बहन एवं ब्र.कु. मुकेश भाई। कार्यक्रम में ब्र.कु. अंजू बहन व करीब 50 ब्र.कु. टीचर्स बहनों सहित 200 ब्र.कु. भाई-बहनों शामिल रहे।



**रतलाम-म.प्र.** मध्य प्रदेश शासन द्वारा वृहद वृक्षारोपण अभियान 'एक पौधा माँ के नाम' के शुभारंभ पर नगर निगम द्वारा 5 लाख पौधारोपण करने के जन अभियान का शुभारंभ करते हुए नगर निगम अध्यक्ष मनीषा मनोज शर्मा, ब्र.कु. मनोरमा दीदी, वार्ड पार्षद मनीषा विजय सिंह चौहान, मंडल अध्यक्ष आदित्य डागा तथा स्थानीय लोग।



**दीसा-गुज.** विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में मौसमी और नीम्बू के पौधे लगाते हुए डॉ. नगीन भाई पटेल, ब्र.कु. सुरेखा बहन तथा अन्य।



**पन्ना-म.प्र.** विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के नशा मुक्त भारत अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज उप सेवाकेंद्र द्वारा गांव-गांव में नुककड़ सभा लगा कर व्यसन मुक्ति का संदेश दिया गया और ग्राम वासियों को नशा छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई गई। इस मौके पर उपसेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन व अन्य भाई-बहनों मौजूद रहे।



**घडगांव-नंदुरबार(महा.)** ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में आयोजित बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. संगीता हुरेज, आशा सुपरवाइजर, अमोल शिंदे, टेक्नीशियन तथा अन्य। शिविर में 25 बच्चे एवं उनके माता-पिता शामिल रहे। शिविर के दौरान विभिन्न विषयों पर बच्चों का मार्गदर्शन किया गया तथा ब्र.कु. राजू भाई व ब्र.कु. जयश्री बहन ने विभिन्न एक्टिविटीज कराईं।



# स्वास्थ्य

## जीरे के फायदे

### मतली और उल्टी में फायदा

सौवर्चल नमक, जीरा, शर्करा तथा मरिच का बराबर-बराबर भाग (2ग्राम) का चूर्ण बना लें। इसमें 4 ग्राम मधु मिलाकर, दिन में 3-4 बार सेवन करें। इससे मतली और उल्टी रूकती है।

### सर्दी-जुकाम से राहत

सर्दी-जुकाम या पुरानी सर्दी से राहत पाने के लिए काले जीरे को जला लें। इसका धुआं सूंघने से फायदा होता है।

कफ से पीड़ित हैं तो जीरे का 10-20 मिली काढ़ा पीने से लाभ होता है।

बुखार में जीरे के काढ़े से गरारा करने पर भूख की कमी नहीं होती है।

### दांतों के रोग में लाभ

दांतों के रोग सभी को हो सकते हैं। अगर आपको भी दांत में दर्द की परेशानी है, तो जीरे के इस्तेमाल से लाभ हो सकता है। काले जीरे का काढ़ा बनाकर कुल्ला करने से दांतों के दर्द से राहत मिलती है।

### दस्त रोकने के लिए जीरा का उपयोग

दस्त में भी जीरे का सेवन करना बहुत ही फायदेमंद होता है। अगर किसी को दस्त हो रहा है, तो उसे 5 ग्राम जीरे को भूनकर पीस लेना है। इसे दही, या दही की लस्सी में मिलाकर सेवन करना है। दस्त में लाभ होता है।

### बच्चों को दस्त होने पर

बच्चे प्रायः दस्त से परेशान रहते हैं। जीरे का प्रयोग इसमें भी बहुत लाभदायक होता है। इसके लिए

# जीरे के औषधीय गुणों को जानें...

आप सब्जी खाते हैं तो जीरा के बारे में जरूर जानते होंगे। जीरा के बिना शायद ही कोई सब्जी बनाई जाती होगी। जब भी कोई सब्जी बनाई जाती है, तो सबसे पहले जीरा का छौंक ही लगाया जाता है, आप भी जीरा का उपयोग करते होंगे और केवल इतना ही जानते होंगे कि जीरा का प्रयोग सब्जी में किया जाता है। यह नहीं जानते होंगे कि जीरा के प्रयोग से कई बीमारियों का उपचार भी किया जा सकता है। जी हाँ, आयुर्वेद में जीरा को एक बहुत ही फायदेमंद औषधि बताया गया है और यह भी बताया गया है कि कैसे जीरा का सेवन कर अनेक रोगों की रोकथाम करने में मदद मिल सकती है। आप जरूर जानना चाहेंगे। आइए जानते हैं -



### बुखार उतारने के लिए

5ग्राम जीरे के चूर्ण को 20 मिली कचनार की छाल के रस में मिला लें। इसे दिन में तीन बार लेने से बुखार उतरता है।

5-10 ग्राम जीरे का पेस्ट और इतना ही गुड़ लें। इन्हें खाकर गुणगुना पानी पिएं। इससे कंपकंपी और ठंड वाला बुखार खत्म होता है।

जीरे को भूनकर पीस लें। इसे एक चम्मच जल में घोलकर, दिन में दो-तीन बार पिलाएं। बच्चों को दस्त में फायदा होता है।

### मलेरिया में जीरा के सेवन से लाभ

मलेरिया बुखार के लिए करेले के 10 मिली रस में,

जीरे का 5 ग्राम चूर्ण मिला लें। इसे दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है। 4 ग्राम जीरे के चूर्ण को गुड़ में मिलाकर खाने से 1 घण्टा पहले लें। इससे मलेरिया और वात रोग ठीक होते हैं।

### बवासीर में प्रयोग

5 ग्राम सफेद जीरे को पानी में उबाल लें। जब पानी एक चौथाई बच जाए, तो उसमें मिश्री मिलाकर सुबह और शाम पिएं। इससे बवासीर में होने वाला दर्द और सूजन ठीक होता है।

### बिच्छू का विष उतारने के लिए प्रयोग

बिच्छू के काटने पर जीरे और नमक को पीसकर घी और शहद में मिला लें। इसे थोड़ा-सा गर्म कर लें। इसे बिच्छू के डंक वाले स्थान पर लगाएं। बिच्छू का विष उतर जाता है।

### नुकसान

#### सीने में जलन

पेट गैस के लिए फायदेमंद जीरे का सेवन अगर ज़्यादा मात्रा में कर लिया जाए तो यह हार्टबर्न यानी सीने में जलन की समस्या को ट्रिगर कर सकता है। दरअसल, जीरा बड़ी तेजी से गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल ट्रेक्ट

से गैस निकालने का काम करता है और इसी वजह से लोगों को हार्टबर्न की दिक्कत होती है। जिसकी वजह से कई बार व्यक्ति डकार से भी परेशान रहता है।

मासिक धर्म के दौरान जीरा खाने से अनेक फायदे होते हैं। लेकिन इस दौरान अगर जीरे का सेवन अधिक कर लिया जाए तो हैवी ब्लिडिंग की समस्या हो सकती है।

जरूरत से ज़्यादा जीरा खाने से ब्लड शुगर लेवल कम हो सकता है। ऐसे में अगर आप डायबिटीज या मधुमेह रोगी हैं तो जीरे का इस्तेमाल संतुलित मात्रा में ही करें।

#### उल्टी की समस्या

जीरे के पानी में नारकोटिक प्रॉपर्टीज पाई जाती है। ऐसे में अगर आप जीरे का सेवन ज़्यादा मात्रा में करते हैं, तो आपको मतली और दिमाग से जुड़ी परेशानी हो सकती है।

#### लिवर डैमेज

जीरे में मौजूद तेल बहुत ज़्यादा वाष्पशील होता है और यही कारण है कि इसके अत्यधिक सेवन से किडनी या लिवर डैमेज होने का खतरा भी बढ़ जाता है। यही वजह है कि लोगों को जीरे का सेवन उचित मात्रा में करने की सलाह दी जाती है।

## खुशखबरी

### आ गई शिव संदेश, राजयोग कॉमेन्ट्री की नयी कुंजी...



हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको

परमात्मा के बारे में बताया जाये, तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक जेबी किताब या पॉकेट बुक

डिज़ाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया, शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।



**रशिया-मॉस्को।** ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय शांतिवन से 10 समर्पित ब्रह्माकुमार भाई मॉस्को के ब्रह्माकुमारीज सेंटर पहुंचे जहाँ उनका अलौकिक स्वागत व सम्मान हुआ तथा एक सुंदर स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन हुआ।



**सिंगरौली-म.प्र।** ब्रह्माकुमारीज के उपक्षेत्रीय मुख्यालय तपोवन कॉम्प्लेक्स विन्ध्य नगर में 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा स्वस्थ एवं स्वच्छ समाज' वार्षिक थीम के तहत आयोजित 'पत्रकार सम्मेलन' में ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी ने सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में भाजपा मंडल अध्यक्ष रामकुमार गुप्ता, नरेंद्र सिंह तोमर उपाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी, पत्रकार नरेंद्र मिश्रा प्रदेश अध्यक्ष, सैफी अब्बास, संतोष शुक्ला व 100 से अधिक पत्रकारों सहित ब्र.कु. लीला बहन, भोपाल, ब्र.कु. रेखा बहन, पोसा तथा ब्र.कु. शोभा बहन, क्षेत्रीय संचालिका सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज,  
आनंद भवन, शांतिवन, आबू रोड (राज.-307510)  
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088  
ई.मेल - omshantimedia.bkivv.org



## हमें वो करना है जो हमारे और दूसरों के लिए सही है

हम जितना मेडिटेशन करते जाते हैं अपने अन्दर ताकत भरती जाती है। ताकत मतलब क्या कि मेरे मन की स्थिति आपके ऊपर डिपेंडेंट नहीं है। यही है ना सिर्फ! मेरे मन की स्थिति परिस्थिति पर, व्यक्ति पर, वस्तु पर डिपेंडेंट नहीं है। मेरे मन की स्थिति मेरी अपनी है। इसका मतलब धागा कट बीच का। अब जैसे ही ये धागा कटेगा, अभी भी प्यार है, बहुत प्यार है, लेकिन अब क्या नहीं है? अब अगर वो दर्द में जाते हैं तो मेरे पास चॉइस है। क्योंकि धागा कट चुका है बीच का, अब धागा कट गया मतलब मैंने ये रियलाइज़ कर लिया है कि अब अगर वो दर्द में जायेंगे तो मुझे जाना ही है। मेरे पास चॉइस है।

इस समय अपने लिए और उनके फायदे के लिए है। मैं चूज़ करता हूँ कैसे रहना है स्टेबल, क्योंकि मैं स्टेबल रहता हूँ। उस समय भी प्यार दे रहा हूँ, ये बहुत बड़ी गलतफहमी है। जो हम कहते हैं कि अगर अध्यात्म का अभ्यास करेंगे, मेडिटेशन करेंगे तो हम बहुत डिटेच हो जायेंगे। तो डिटेच शब्द को कैसे लेते हैं? बहुत निगेटिव। डिटेच हो जायेंगे तो ये समझते हैं कि ये अपने घर से, अपने परिवार से कैसे हो जायेंगे, बहुत रूखे-रूखे हो जायेंगे। ये ख्याल नहीं करेंगे, ये ध्यान नहीं देंगे। वास्तव में तो वो क्या करेंगे और भी ज़्यादा अच्छी तरह से कर सकेंगे क्योंकि अब

वो जो करेंगे उनके लिए करेंगे। वो गुस्सा करेंगे तो भी आप शांत रहेंगे तो आपका रिश्ता पहले से भी बेटर हो जायेगा। इसका मतलब आपकी एक्सपेक्टेन्स औरों से



डॉ. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

कम होती जायेगी। क्योंकि अब हमारी स्थिति उनके बोल या उनके व्यवहार पर डिपेंडेंट नहीं है। जैसे ही ये स्थिति की प्रैक्टिस होने लगी वैसे ही एक्सपेक्टेन्स धीरे-धीरे खत्म।

आपको ये करना आपके लिए अच्छा है। आप पढ़ोगे तो आपके मार्क्स अच्छे आयेंगे, ये आपके लिए अच्छा है। मेरी खुशी में कोई ऊपर-नीचे नहीं होने वाला आपकी परसेंटेज के साथ। अभी क्या हो रहा है एक प्रतिशत ज़्यादा तो ज़्यादा खुशी, 2 प्रतिशत कम आ गये तो हमारे भी दो प्रतिशत कम खुशी। तो हमारी भी

खुशी उनके साथ ऊपर-नीचे होती है, तो हम उनके ऊपर डिपेंड हुए। तो डिटेचमेंट हमें और भी क्या बना देगी? स्ट्रॉन्ग। और जितना स्ट्रॉन्ग बना देगी उतने हमारे रिश्ते? इस बात का ध्यान रखना है कि कई बार हमारे परिवार में से एक जन आता है मेडिटेशन करने के लिए, सीखने के लिए तो बाकी घर के लोग रोकने लगते हैं उनको। पिकचर जायेंगे कोई नहीं रोकेगा, किटी पार्टी में जायेंगे, इधर-उधर जायेंगे कोई नहीं रोकेगा, और ये बोलेंगे कि जाना चाहिए, मिलना चाहिए सबको, करना चाहिए सब, जो सारी दुनिया कर रही है। लेकिन यहाँ जायेंगे तो... क्योंकि हमें लगता है वहाँ जायेंगे तो ये गया। तो ये सोचना है कहाँ हमारा और कहाँ हमारे परिवार का फायदा हो रहा है और कहां और ही नुकसान हो रहा है, ये ज़रूरी है। लेकिन हम सिर्फ ये देखते हैं कि सब लोग क्या कर रहे हैं! यही देखेंगे ना! तो जो सब लोग कर रहे हैं वो सही हो गया। ये नहीं देखते कि जो सब लोग कर रहे हैं वो सभी लोगों का रिज़ल्ट क्या है, वो सब कर-कर के। जो सब लोग कर रहे हैं वो भी हम करेंगे, तो जो सबका रिज़ल्ट होगा वो ही फिर हमारा भी रिज़ल्ट होगा। अगर हम अच्छा कोई और रिज़ल्ट चाहते हैं तो हमें कुछ डिफ्रेंट करना पड़ेगा। और उसके लिए हमें डिफ्रेंट सोचना पड़ेगा। - क्रमशः



धामनोद-म.प्र.। नवीन गठित केंद्रीय मंत्रिमंडल की केंद्रीय राज्य मंत्री महिला एवं बाल विकास बहन सावित्री ठाकुर को बधाई एवं शुभकामनाएं देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए डॉ. प्रीति बहन व डॉ. सीमा बहन।



रशिया-मॉस्को। रूसी संघ में भारत के राजदूत के रूप में नियुक्त होने के बाद विनय कुमार एवं भारतीय दूतावास की प्रथम महिला श्रीमती इओना सिन्हा का ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में प्रथम बार आना हुआ। जहाँ पर ज्ञानचर्चा हुई और उन्होंने अपना अनुभव भी सभी के साथ साझा किया। इस मौके पर राजयोगिनी डॉ. सुधा दीदी, डॉ. विजय कुमार, डॉ. इरिना लेम्बर्ग सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।



बेलारूस। ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी के बेलारूस की वीर भूमि ब्रेस्ट में जाने के 33वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगी डॉ. विजय भाई ने शामिल होकर सभी को ईश्वरीय ज्ञान और गुणों से लाभान्वित किया। इसके साथ ही ब्रेस्ट किले की यात्रा के दौरान विजय भाई ने पायनियर संगठन की प्रमुख श्रीमती गैलाना इवानोवा से भी मुलाकात की।



बिलासपुर-छ.ग.। कारगिल विजय दिवस के अवसर पर बिलासपुर पुलिस द्वारा बिलासपुर गुड़ी में आयोजित 'एक दीप शहीदों के नाम' विषयक कार्यक्रम में एसपी रजनेश सिंह, डॉ. मंजू दीदी, अति. पुलिस अधीक्षक यातायात नीरज चंद्राकर, अति. पुलिस अधीक्षक उमेश कश्यप, एसपी अर्चना झा, सीएसपी उमेश गुप्ता, एसआई उमाशंकर पाण्डेय, जावेद भाई, शैलेन्द्र भाई तथा अन्य लोग उपस्थित रहे।



ग्वालियर-माधवगंज(म.प्र.)। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के प्रभु उपहार भवन सेवाकेंद्र में आयोजित कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में उपस्थित श्रद्धालु भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए सेवाकेंद्र संचालिका डॉ. आदर्श दीदी। इस मौके पर डॉ. प्रहलाद, डॉ. गुरचरन, डॉ. सुरभि, डॉ. रोशनी, डॉ. महिमा, डॉ. पवन व डॉ. जीतू सहित अनेकानेक लोग उपस्थित रहे।



भरूच-झाड़ेश्वर(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में आने पर आध्यात्मिक चर्चा करने एवं ओमशान्ति मीडिया द्वारा हो रही ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् रोटरी क्लब और इनर व्हील क्लब ऑफ भरूच की पूर्व अध्यक्ष रिजवाना जमीनदार को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ओमशान्ति मीडिया के डाटा मैनेजर राजयोगी डॉ. दिलीप भाई, माउण्ट आबू तथा ईश्वरीय सौगात भेंट कर ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय के ग्लोबल सम्मिट में आने का निमंत्रण देते हुए ब्रह्माकुमारीज अंकलेश्वर सेवाकेंद्र संचालिका डॉ. नीमा बहन। साथ ही सीईओ फार्म ब्रिज फाउंडेशन महर्षि देव व डॉ. राजेश भाई।



इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के ज्ञानदीप भवन सेवाकेंद्र पर गुरुओं के भी गुरु परम सद्गुरु परमपिता शिव बाबा की याद में गुरु पूर्णिमा महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।



चेवला-महा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर एम.एस.जी.एस. शिक्षण प्रसारक मंडल में योगाभ्यास कराते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र संचालिका डॉ. नीता दीदी, डॉ. अनु दीदी, डॉ. दामिनी दीदी तथा अन्य डॉ. भाई-बहनें। योग करते हुए सभी विद्यार्थीगण।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: omsmererf@indianbk



BANK NAME:- INDIAN BANK  
BRANCH:- Shantivan, Talhati  
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF  
ACCOUNT NO:- 7552337300,  
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - डॉ. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,

पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org



# परमात्म ऊर्जा



ज्ञानस्वरूप होने के बाद व मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो युक्तियुक्त नहीं है वह कर लेते हो, तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पद्यगुणा ज़्यादा है। इस कारण बन्धन युक्त आत्मा स्वतन्त्र न होने कारण जो चाहे वह नहीं कर पाती। महसूस करते हैं कि यह नहीं होना चाहिए, यह होना चाहिए, यह मिट जाए, खुशी का अनुभव हो जाए, हल्कापन आ जाए, सन्तुष्टता का अनुभव हो जाए, सर्विस सक्सेसफुल हो जाए व दैवी परिवार के समीप और स्नेही बन जाएं। लेकिन किए हुए कर्मों के बन्धन कारण चाहते हुए भी वह अनुभव नहीं कर पाते हैं। इस कारण अपने आपसे व अपने पुरुषार्थ से अनेक आत्माओं को सन्तुष्ट नहीं कर सकते हैं और न रह सकते हैं। इसलिए इस कर्मों की गुह्य गति को जानकर अर्थात् त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म करो, तब ही कर्मातीत बन सकेंगे। छोटी गलतियां संकल्प रूप में भी हो जाती हैं, उनका हिसाब-

किताब बहुत कड़ा बनता है। छोटी गलती अब बड़ी समझनी है। जैसे अति स्वच्छ वस्तु के अन्दर छोटा-सा दाग भी बड़ा दिखाई देता है। ऐसे ही वर्तमान समय अति स्वच्छ, सम्पूर्ण स्थिति के समीप आ रहे हो। इसलिए छोटी-सी गलती भी अब बड़े रूप में गिनती की जाएगी। इसलिए इसमें भी अनजान नहीं रहना है कि यह छोटी-छोटी गलतियां हैं, यह तो होंगी ही। नहीं। अब समय बदल गया। समय के साथ-साथ पुरुषार्थ की रफ्तार बदल गई। वर्तमान समय के प्रमाण छोटी-सी गलती भी बड़ी कमजोरी के रूप में गिनती की जाती है। इसलिए कदम-कदम पर सावधान! एक छोटी-सी गलती बहुत समय के लिए अपनी प्राप्ति से वंचित कर देती है। इसलिए नॉलेजफुल अर्थात् लाइट हाउस, माइट हाउस बनो। अनेक आत्माओं को रास्ता दिखाने वाले स्वयं ही रास्ते चलते-चलते रूक जाएं तो औरों को रास्ता दिखाने के निमित्त कैसे बनेंगे? इसलिए सदा विघ्न विनाशक बनो।

# कथा सरिता

एक बार की बात है, एक राजा शिकार करने के लिए वन में गए, एक हिरण को देख कर उन्होंने अपने घोड़े को उसके पीछे दौड़ाया। हिरण का पीछा करते हुए उनके बाकी के साथी उनसे पीछे ही रह गए।

राजा दूर एक ऐसे जंगल में पहुंच गया, जहाँ मीलों तक पानी नहीं था, राजा को प्यास ने बहुत ही ज़्यादा व्याकुल कर दिया था, जब राजा और कुछ आगे बढ़े तो उन्हें एक किसान की झोपड़ी दिखाई दी, राजा दौड़कर झोपड़ी के पास गए। जहाँ पर उस झोपड़ी के पास आठ-नौ साल की कन्या खेल रही थी। राजा ने उस कन्या से कहा बेटी शीघ्र ही एक गिलास जल लाओ, मुझको बहुत जोर से प्यास लगी है।

उस कन्या ने राजा को आम मुसाफिर समझ कर एक खाट लाकर डाल दी

और बैठने के लिए कहा तथा जल का एक गिलास लाकर राजा के हाथ में थमा दिया। राजा ने देखा कि पानी में तिनके पड़े हुए हैं, जिनको देख कर राजा को बहुत क्रोध आया और उसी आवेश में आकर उस कन्या से कहने लगे कि तुम्हारे पिता कहाँ हैं? कन्या ने उत्तर दिया, मिट्टी को मिट्टी में मिलाने गए हैं। राजा को लड़की पर और ज़्यादा क्रोध आया, परंतु प्यास लगी थी, जल पीना था

इसीलिए राजा क्रोध को दबा कर कहने लगे कि और साफ जल लाओ, वह कन्या जल लाने के लिए फिर से झोपड़ी के अन्दर गयी, इतने में ही उस लड़की का पिता भी वहाँ आ गया, उसने तुरंत राजा को पहचान लिया और उसने प्रणाम किया राजा को और कहने

कन्या के पिता कहने लगे हुजूर कन्या ने ठीक ही उत्तर दिया है, एक सज्जन के बच्चे की मौत हो गई थी हम उसके शरीर को मिट्टी में दबाने गए थे, इतने में वो कन्या भी जल का गिलास लेकर आ गई, किसान ने पूछा कि बेटी तुमने राजा को अच्छा जल क्यों नहीं दिया? कन्या ने उत्तर दिया, "पिता जी राजा धूप में भागते हुए आये थे। सारे शरीर से पसीना छूट रहा था, यदि आते ही जल पिला दिया जाता तो वो जल गर्म और ठंडे की वजह से राजा को नुकसान हो सकता था, मैं इनको मना तो नहीं कर सकी, परंतु जल में तिनके डाल लाई, ताकि राजा कुछ समय तक जल न पी सकें।

राजा कन्या की चतुरता को देख बहुत प्रसन्न हुए और अपने गले से बहुमूल्य हीरों का हार उस

कन्या के गले में डाल दिया, उनको हमेशा-हमेशा के लिए दरिद्रता के दुःखों से छुड़ा दिया।

जब यहाँ का राजा भी प्रसन्न होकर यहाँ के दुःखों से हमें छुड़ा देता है तो फिर परमपिता परमात्मा राजी हो गये तो फिर किसके अन्दर ताकत है जो हमको किसी प्रकार का कष्ट दे सके! परंतु परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए सच्चे प्रेम की आवश्यकता है।



## कन्या की समझदारी

लगा कि 'हुजूर आप एक गरीब की झोपड़ी में कैसे पधारें? राजा कहने लगा कि मैं शिकार के लिए वन में आया था, अपने साथियों से बिछड़ कर दूर आ गया हूँ, मुझे बहुत जोर से प्यास लगी थी, यहाँ तुम्हारी कन्या से मैंने जल मांगा, तब तुम्हारी कन्या जल में तिनके डाल कर ले आई, जब मैंने तुम्हारे बारे में पूछा तो उसने कहा कि "मिट्टी को मिट्टी में मिलाने गए हैं"।



**खजुराहो-म.प्र.**। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में 'स्वस्थ एवं स्वच्छ समाज बनाने में शिक्षकों की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अतुल चतुर्वेदी, बी.आर.सी., बालकृष्ण त्रिपाठी, रामगोपाल शर्मा, पी.सी. खरे, संजय द्विवेदी, प्रभात सिंह, गुड्डन अरिनहोत्री, नमिता जी, रिंतु जॉन, सुमन सिंह, जगदीश सोनी, पन्नालाल अहिरवार, एस.बी. अवस्थी व राममिलन सिंह सहित करीब 200 शिक्षकों ने कार्यक्रम का लाभ लिया। इस मौके पर बिजावर से आई ब्र.कु. प्रीति बहन, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन व अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे। कार्यक्रम में उपस्थित सभी शिक्षकों को सम्मानित किया गया।



**छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)**। सावन के पहले सोमवार को ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर द्वादश ज्योतिर्लिंगम की अद्भुत एवं अनुपम झाँकी सजाई गई तथा साथ ही गुरु पूर्णिमा भी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान कार्यक्रम में जानराय टोरिया महंत श्री श्रृंगारी दास महाराज, मोटे की महावीर मंदिर महंत श्री कमलेश बब्बाजू तथा अन्य संत-महंत सहित छतरपुर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, ब्र.कु. रमा बहन व अन्य भाई-बहनें शामिल रहे। झाँकी के दर्शन के लिए नगर पालिका अध्यक्ष सुरेंद्र ज्योति चौरसिया, जिला अधिकारी आयुष विभाग डॉ. विज्ञान देव मिश्रा, समाजसेवी शंकर लाल सोनी, जे.पी. मिश्रा, महेंद्र सिंह परमार, लखन लाल तिवारी, ए.के. अवस्थी, दर्शना वृद्धाश्रम संचालिका प्रभा विदु सहित बड़ी संख्या में लोगों का आना हुआ।



**राजगढ़-म.प्र.**। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेंद्र में आने वाले सभी भाई-बहनों द्वारा समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनों का सम्मान किया गया जिसमें जिला प्रभारी ब्र.कु. मधु दीदी, ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी दीदी, ब्र.कु. वैशाली दीदी सहित अन्य बहनें शामिल रहीं।



**जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)**। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पौधा रोपण करते हुए सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. भावना दीदी, ब्र.कु. रूपक, ब्र.कु. विजय, ब्र.कु. परेश, ब्र.कु. जगदीश तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



**बिलासपुर-छ.ग.**। पुलिस अधीक्षक रजनेश सिंह द्वारा चलाए जा रहे चेतना अभियान के द्वितीय चरण 'साइबर की पाठशाला' के तहत सबसे अधिक 55 स्थानों पर साइबर की पाठशाला लगा कर साइबर अपराध के विरुद्ध जागरूक करने की अतुलनीय सेवाओं के लिए ब्रह्माकुमारीज राजयोग भवन सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. स्वाति बहन को लगातार दूसरी बार 'पीपीपी- पुलिस पब्लिक पार्टिसिपेशन' अवॉर्ड से पुलिस अधीक्षक द्वारा सम्मानित किया गया।



**धमतरी-छ.ग.**। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित राजयोग महोत्सव कार्यक्रम में अनजनेय वाण्येय, पुलिस अधीक्षक, श्रीकृष्ण जाधव, वन मंडल अधिकारी, राजेन्द्र शर्मा, पूर्व सभापति जिला धमतरी, योगाचार्य विकास कंसारी, संचालक योगा विकास फाउंडेशन, राजयोगिनी ब्र.कु. सरिता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. नवनीता दीदी तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



**कच्छ-आदिपुर(गुज.)**। ब्रह्माकुमारीज के शिव कल्याणकारी भवन में शिक्षकों के लिए आयोजित 'शिक्षा में नई दिशा' विषयक गोष्ठी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए बाएँ से ब्र.कु. दीपिका बहन, ब्र.कु. देवेन्द्र भाई, ब्र.कु. अमृत भाई, सेवा सर्वोपरि संस्था के फाउंडर कल्पेश आहूजा, आदिपुर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. भारती दीदी, माउण्ट आबू से ब्रह्माकुमारीज एजुकेशन विंग के फेकल्टी मेम्बर राजयोगी ब्र.कु. वीरेंद्र भाई, सेवी इंटरनेशनल स्कूल की मैनेजिंग डायरेक्टर श्रीमती प्रीति मुंसियानी, सामाजिक अग्रणी पूजा बहन परियानी एवं ब्रह्माकुमारीज गांधीधाम भारत नगर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सरिता बहन।



# संत ने खोल कर रखे ब्रह्माकुमारीज के सारे राज ब्रह्मा जी के कर्तव्य को जानें...

एक अद्भुत रहस्य जो हमने सुना तो है लेकिन उस समय काल से सम्बन्धित घटना को सही रूप में जाना नहीं। कहते हैं कि ब्रह्मा ने सृष्टि रची, परमात्मा शिव के निर्देशन में। मैंने स्वयं इनके मुख्यालय में जाकर देखा है कि कैसे ब्रह्मा(दादा लेखराज) ने छोटी-छोटी बालिकाओं को तपस्वी बनाकर आने वाली स्वर्णिम दुनिया के योग्य बनाया। ये मैंने अपने अन्तर्मन से जाना और समझा कि ब्रह्मा जी का रहस्य क्या है। प्रस्तुत है - उनसे पूछे गए सवाल पर उन्हीं की राय, उन्हीं के ही शब्दों में।



और अगर आप शंकर को देख रहे तो शंकर भी त्रिशूल हाथ में लिए हुए और बैठे हैं ध्यान में किसी के। तो तीनों किसके ध्यान में बैठे हैं? वो शिव के ध्यान में बैठे हैं। जो सृष्टिकर्ता भी है। उसने अपने कार्य को तीन भागों में बांट दिया। और तीनों को कह दिया कि तुम सृष्टि को बनाओ... ठीक है व

प्रजापिता ब्रह्मा कहला गए, पालने वाले विष्णु हुए और संहारकर्ता शंकर हो गए। अब आपने पूछा कि इन महाराज ने यानी कि दादा लेखराज कृपलानी जी ने अपने आपको प्रजापिता ब्रह्मा घोषित किया, नहीं। इन्होंने नहीं किया...ना।

यह पुरानी बात है, सन् 1936 में इन्होंने देखा बड़े ध्यान में जब चले गए, बेचैनी हुई और उस ध्यान में इन्होंने प्रलय को देखा। प्रलय में बम फट रहे हैं, लोग आपस में लड़ रहे हैं, मारकाट मची हुई है। यानी कलियुग का इन्होंने आगे आने वाला समय देखा। भाई-भाई को मार रहा है। रिश्ते तार-तार होते चले जा रहे

हैं। आयु लोगों की बहुत कम हो गई है यानी सृष्टि का विनाश उन्होंने अपनी खुली आंखों से देखा। कोई गरीब तो थे नहीं, बचपन से ही हीरों के बड़े पारखी थे, हीरों के व्यापारी थे। कलकत्ता तक इनका व्यापार था। उस समय कराची सिंध प्रांत जो आज पाकिस्तान में है वहां ये पैदा हुए थे। 1876 में पैदा हुए थे। 1936 में इनको प्रलय का साक्षात्कार हुआ और वहीं पर साथ ही साथ जब एक बहुत गहन अंधकार होता है, तो एक सूर्योदय की किरण जब निकलती है तभी निकलती है, गहन अंधकार की बात है। भीतर इनके एक साक्षात्कार हुआ... किसका? भगवान शिव का साक्षात्कार किया इन्होंने। शिव ने इन्हें प्रेरणा दी कि बेटा उठ, कुछ कर। नई सृष्टि का सृजन कर। तो इन्होंने अपने साथ नारी शक्ति को लिया। नारी भी क्या छोटी-छोटी बालिकाएं इनके साथ। और क्या बनाया इन्होंने ओम मंडली। ये पहले प्रजापिता ब्रह्माकुमारी नाम नहीं था, पहले ओम मंडली नाम था। ओम का उच्चारण करना, शिव का उच्चारण करना, भजन करना, कीर्तन करना यही इनका कार्य

था। और इन्होंने कहा कि चरित्र जो श्रीराम का चरित्र था, जो श्रीकृष्ण का चरित्र था वो वाला चरित्र सब अपनाएंगे। वही गुण अपनाएंगे और इन्होंने एक-एक गुण स-चरित्रता, आचरण शुद्ध होना चाहिए, सभी से प्रेम करना चाहिए, मीठी वाणी बोलनी चाहिए। बस, यह करते-करते, एक-एक गुण डालते-डालते क्योंकि बच्चों में गुण चले जाते हैं। फिर इन्होंने सोचा कि क्या किया जाए इसके बाद? ये छोटी-सी मंडली है, इस मंडली को बड़ा रूप देना है। तो इन्होंने सारा व्यापार अपना कलकत्ता में अपने पार्टनर पर छोड़ दिया। आ गए लौट के, भारत का पार्टीशन हो गया, हिंदुस्तान पाकिस्तान बन गया। अब भारतवर्ष में उन्होंने 1950 में वहां से कुछ बालिकाएं साथ में आईं। जिन्हें आज लोग दादियों के नाम से जानते हैं। वो साथ में आ गईं, पैसा था उनके पास। क्योंकि हीरों के व्यापारी थे, गरीब नहीं थे। उन्होंने माउण्ट आबू में आके जो आज यहां पर इनका समझिये कि अंतर्राष्ट्रीय हेड क्वार्टर बन चुका है। वहां पर माउण्ट आबू में इन्होंने स्थान लिया और वहीं पे एक विश्व विद्यालय की स्थापना की। - क्रमशः

**रिपोर्टर:** यहां पर दादा लेखराज कृपलानी को प्रजापिता ब्रह्मा कहा गया है। क्या वो ब्रह्मा है?

**संत:** ब्रह्मा, अब यहां भी एक थोड़ा-सा जो समझ का फेर है वो बताते हैं आपको। अब देखिए भगवान शिव एक हैं, पूरी सृष्टि के रचयिता हैं। उनके आगे तीन भाग कर दिए गए, क्या- ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। आप देखेंगे कि ब्रह्मा भी किसी की तपस्या में लीन है। साथ ही साथ देखिए विष्णु भी किसी ना किसी की तपस्या में लीन है। चाहे वह राम का रूप ले-ले या कृष्ण का रूप ले-ले, भगवान शिव का तप तो वो भी कर रहे हैं। उनकी पूजा कर रहे हैं



**सतना-कृष्णा नगर(म.प्र.)।** सेंट्रल जेल सतना की जेलर लीना कोस्टा के ब्रह्माकुमारीज के स्थानीय सेवाकेंद्र में आने पर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रानी दीदी तथा कटनी सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी द्वारा परमात्म संदेश एवं ईश्वरीय सौगात भेंट कर उनका स्वागत व सम्मान किया गया।



**राजनानंदगांव-छ.ग.।** आध्यात्मिकता के द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए नई दुनिया पत्रिका के द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. रम्भा बहन व ब्र.कु. मुरलीधर सोमानी भाई।



**इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)।** ब्रह्माकुमारीज के ज्ञानदीप भवन सेवाकेंद्र में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत जन जागरूकता के लिए आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. रजत नागदा, डी-एडिक्शन काउंसलर एवं मास्टर ट्रेनर सोशल जस्टिस डिपार्टमेंट इंदौर, रितेश सिंह, काउंसलर, पहचान डी-एडिक्शन केंद्र, डॉ महेश गुप्ता, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. प्रतिमा बहन एवं ब्र.कु. ललिता बहन।



**बुलढाणा-महा.।** ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. उर्मिला बहन, एडवोकेट शर्वरी तुपकर, कृषि महाविद्यालय के प्राचार्य अनिल जी तथा फूड एंड ड्रग इंस्पेक्टर गिरके जी।



**रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)।** बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'प्रेरणा समर कैंप' में बच्चों को पुरस्कार वितरित करने के पश्चात् समूह चित्र में होम्योपैथी डॉक्टर श्वेता जोशी, बैंक ऑफ बड़ौदा के उप क्षेत्रीय प्रबंधक अंबर जोशी, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. गीता दीदी तथा सभी प्रतिभागी बच्चे।



**नौगांव-म.प्र.।** ब्रह्माकुमारीज द्वारा नौगांव पुलिस थाने, डीम वैली कॉलोनी एवं ग्राम धौरा में वृक्षारोपण कर सभी को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के दौरान युवारा सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. नीतू बहन, गरीली चौकी प्रभारी नेहा गुर्जर, ब्र.कु. नीतू, ब्र.कु. रीना, पत्रकार संतोष गंगेले सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।











## उन्नत समाज का निर्माण : ब्रह्माकुमारीज सेवा प्रभाग द्वारा कार्यक्रम का सफल आयोजन श्रेष्ठ समाज के लिए आध्यात्मिक दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक



**ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू।** ब्रह्माकुमारीज के ज्ञानसरोवर परिसर में समाज सेवा प्रभाग द्वारा 'समृद्ध एवं सशक्त समाज की कुंजी-अध्यात्म' विषय पर आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान सिखाता है कि समाज को सुधारने से पहले स्वयं का सुधार आवश्यक है। ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि सच्चे आनंद के लिए आत्मिक शक्ति का अनुभव जरूरी है, परिवर्तन आत्मा से शुरू होता है। असली आत्मिक विकास व समाज सेवा का सही उपाय तब होता है जब हमारा सम्बंध परमात्मा से जुड़ता है। महाराष्ट्र, अमरावती जेल अधीक्षक श्रीमती कीर्ति चिंतामणि ने कहा कि हमने टीवी में शिवानी बहन को सुनकर सीखा कि संकल्प से सिद्धि मिलती है और इसलिए अपने हर काम को शुद्ध संकल्पों के साथ किया जाना चाहिए। हमने नकारात्मक परिस्थितियों में भी यह सोचा कि उन्हें लोगों से दुआएं मिलें। इसके लिए हमने कारागार में बंदियों के मानसिक सुधार पर काम किया, जो केवल ब्रह्माकुमारी

बहनों की प्रेरणा से संभव हुआ। समाज सेवा प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता हमें

सकते हैं, परमात्मा को जान सकते हैं। यहां ध्यान रखा जाता है कि आत्मा को गुणों से समृद्ध और चारित्रिक रूप से श्रेष्ठ बनाना

### पाँच दिवसीय सम्मेलन में भारत वर्ष से सैंकड़ों गणमान्य लोग हुए शरीक

पाँच दिवसीय सम्मेलन के दौरान सरजीव पटेल,चेयरमैन,इंदौर जूनियर चेम्बर चेरिटेबल ट्रस्ट, कच्छ गुजरात से आए लाइफ स्किल्स डायनेमिक मेडिटेशन संस्थापक पंडित देवज्योति शर्मा, पुणे से आए जीवन प्रकाश योजना अध्यक्ष रमणलाल लूंकड़, दृष्टि उत्थान ट्रस्ट संस्थापक श्रीमती शालू दुग्गल, दिल्ली अखिल भारतीय रचनात्मक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष विभूति कुमार मिश्रा, समाजसेवी अचर्ना मेंहदीरता, चण्डीगढ़, ट्रांस यूनिजन सीआईबीआईएल लिमिटेड के डिप्टी वाइस प्रेसिडेंट पीयूष धोका, मुम्बई, रोटरी इंटरनेशनल असिस्टेंट गवर्नर ब्र.कु. राकेश, इंदौर आदि अनेक गणमान्य लोगों सहित देशभर से आये वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. भाई-बहनों ने भी अपने विचार रखे। प्रभाग की दिल्ली ज़ोन की क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. आशा व प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. अवतार ने भी अपने विचार रखे।

यह सिखाती है कि अपनी कर्मद्वियों पर नियंत्रण रखने से ही हम सशक्त होते हैं। प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. प्रेम ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था इश्वरीय मत पर सरल रीति से जीवन जीने की राह दिखाती है। इसकी विद्या से हम स्वयं को समझ

सकते हैं, परमात्मा को जान सकते हैं। यहां ध्यान रखा जाता है कि आत्मा को गुणों से समृद्ध और चारित्रिक रूप से श्रेष्ठ बनाना

## 'एक पेड़ माँ के नाम' पौधारोपण कार्यक्रम में शहरी जनों और संस्थान ने लिया हिस्सा

**नीमच-म.प्र।** नगरपालिका द्वारा विशाल स्तर पर आयोजित हरित नीमच अभियान के अन्तर्गत कन्या महाविद्यालय के सम्मुख 'एक पेड़ माँ के

राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी, राजयोगी सुरेन्द्र आदि विशिष्ट अतिथियों के अलावा पार्षदगण मनोहर मोटवानी, शारदा पाटनी, मीना जायसवाल, वन्दना

नगरपालिका द्वारा आयोजित 'हरित नीमच अभियान' में ब्रह्माकुमारीज संस्थान का अमूल्य सहयोग रहा। विधायक, भाजपा जिलाध्यक्ष, नपा अध्यक्ष एवं ब्रह्माकुमारी सविता दीदी आदि के आतिथ्य में पुष्प पौधारोपण किया गया।

नाम' पौधारोपण कार्यक्रम किया गया। इसके अन्तर्गत वार्ड क्र. 25, 34 एवं 35 के क्षेत्र में श्री जाजू कन्या महाविद्यालय के सम्मुख पुष्प पौधारोपण कार्यक्रम में विधायक दिलीप सिंह परिहार ने अपने

खण्डेलवाल आदि सभी ने पुष्प पौधे रोपित किये। इस मौके पर पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष हेमन्त हरित, वरिष्ठ भाजपा नेता संतोष चोपड़ा, विनीत पाटनी, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता बृजेश सक्सेना, अनेक पुरस्कार प्राप्त वृक्ष मित्र



सम्बोधन में नगर पालिका के प्रयासों की सराहना की, साथ ही ब्रह्माकुमारीज संस्थान के बारे में बताया कि यह संस्थान निःस्वार्थ सेवा के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी है तथा वृक्षारोपण द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर चलाये जा रहे हैं। कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष पवन पाटीदार, नपा अध्यक्ष श्रीमती स्वाति गौरव चोपड़ा, उपाध्यक्ष श्रीमती रंजना करण परमाल, ब्रह्माकुमारीज संस्थान की

जगदीश शर्मा, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक किरण मोरे, डॉ. राकेश वर्मा, साबिर मसूदी, राजेन्द्र जारोली, गौरव चोपड़ा, महिपाल सिंह चौहान आदि सहित शहर के अनेकानेक कार्यक्रम भी इस संस्थान द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर चलाये जा रहे हैं। कार्यक्रम में विशेष रूप से ब्रह्माकुमारीज संस्थान की ओर से अनेक ब्र.कु. भाई-बहनों ने भाग लिया तथा अपने बैनर व झण्डे तले अनेकानेक पौधे रोपित किये।

## महिलाओं द्वारा संचालित ब्रह्माकुमारीज संस्थान सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत - हर्ष मल्होत्रा

**ओ.आर.सी.-गुरुग्राम।** ब्रह्माकुमारीज महिलाओं द्वारा संचालित विश्व का सबसे बड़ा संगठन है। यह संस्था विश्व बंधुत्व के लिए महान कार्य कर रही है। उक्त विचार केंद्रीय राज्यमंत्री हर्ष मल्होत्रा, कॉर्पोरेट मामलों और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार ने ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि ओआरसी में आने से उन्हें शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा का आभास हुआ। साथ ही माननीय मंत्री ने ये भी कहा कि राजनीतिक जीवन में होते हुए भी उन्हें सामाजिक सरोकार का अधिक से अधिक ध्यान रहता है। जिसका असली कारण उनका राष्ट्रीय स्वयं संघ से जुड़े होना है। माउण्ट आबू से ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि हम सब आत्माएं एक परमात्मा की संतान होने के नाते आपस में भाई-भाई हैं। आत्मा के स्वधर्म में स्थित होने से ही हम धार्मिक एवं भाषा के भेदभाव से ऊपर उठ सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत में दैवी संस्कृति थी। जिसे हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के नाम से जानते हैं। लेकिन आज के युग में वो संस्कृति प्रायः लोप हो गई है।



इसलिए कलियुग अंत में परमपिता परमात्मा शिव पुनः अवतरित हो उस आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। कार्यक्रम में संस्था के अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई एवं

ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने भी अपने विचार रखे। इस मौके पर संस्थान के वरिष्ठ भाई-बहनों सहित अनेक सदस्य मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. हुसैन ने किया।